प्रारंभिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल
हिंदी भाषा
प्रारंभिक स्तर

परिचय
बच्चे अपने साथ बहुत कुछ लेकर विद्यालय आते हैं – अपनी भाषा, अपने अनुभव और दुनिया को देखने का अपना नज़रिया आदि। बच्चे घर-परिवार एवं परिवेश से जिन अनुभवों को लेकर विद्यालय आते हैं, वे बहुत समृद्ध होते हैं। उनकी इस भाषायी पूजनी का इस्तेमाल भाषा सीखने-सिखने के लिए किया जाना चाहिए। पहली बार विद्यालय में आने वाला बच्चा अनेक शब्दों के अर्थ और उनके प्रभाव से परिचित होता है। लिपिवाद (चिह और उससे जुड़ी ध्वनियाँ) बच्चों के लिए अमूर्त होती हैं, इसलिए पढ़ना का प्रारंभ असजीव वसंतों से ही होना चाहिए, और किसी उद्योग के लिए होना चाहिए। यह उद्योग कहाँ सुनकर-पढ़कर आनंद लेना भी हो सकता है। धीरे-धीरे बच्चों में भाषा की लिपि से परिचित होने के बाद अपने परिवेश में उपलब्ध लिखित भाषा की पढ़ने-समझने की विज्ञान उत्पन्न होने लगती है। भाषा सीखने- सिखने का इस प्रक्रिया के मूल में बच्चों के बारे में यह अवधारणा है कि बच्चे दुनिया के बारे में अपनी समझ और ज्ञान का निर्माण स्वयं करते हैं। यह निर्माण किसी के सिखाए जाने या जोर-जवाबदेश से नहीं बल्कि बच्चों के स्वयं के अनुभवों और आवश्यकताओं से होता है। इसलिए बच्चों को ऐसा वातावरण मिलना जरूरी है जहाँ वे बिना रोक-टोक के अपनी उपलब्धता के संसार की अनुसार पढ़ने-लिखने की अनुभव कर सकें। यह अवधारणा बच्चों की भाषायी क्षमताओं पर भी लागू होती है। विद्यालय में आने पर बच्चे प्रायः स्वयं को वैज्ञानक अभिव्यक्ति करने में असमर्थ पाते हैं, क्योंकि जिस भाषा में वे सहज रूप से अपनी राय, अनुभव, भावनाएँ आदि व्यक्त करना चाहते हैं, वह विद्यालय में प्रायः स्वीकृत नहीं होती। भाषा-शिक्षण को बहुभाषी संदर्भ में रखकर देखने की आवश्यकता है। कक्षा में बच्चे अलग-अलग भाषावी-संस्कृतिक व्यक्तिपूर्ण होने आते हैं। कक्षा में इनकी भाषाओं का स्वरूप किया जाना चाहिए, क्योंकि बच्चों की भाषा को नकारने का अर्थ है– उनकी अस्मिता को नकारना। प्रारंभिक स्तर पर भाषा सीखने-सिखने के संबंध में यह एक जरूरी बात है कि बच्चे विभिन्न प्रकार के परिचित और अपरिचित संदभों के अनुसार भाषा का सही प्रयोग कर सकें। वे सहज, करपसारी, प्रभावशाली और व्यवस्थित हो से किस्म-किस्म का लेखन कर सकें। वे भाषा का प्रभावी बनाने के लिए सही शब्दों का प्रयोग कर सकें। यह भी ज़रूरी है कि पढ़ना, सुनना, लिखना और बोलना – इन चारों प्रक्रियाओं में बच्चे अपने पूर्वजान की सहायता से अर्थ की उद्धरण कर पाएं और कहीं गई बात के निहितार्थ को भी पकड़ पाए। भाषा-संप्राणित संबंधी आगे की चर्चा में पढ़ने को लेकर जिस बात पर बल दिया गया है उसके अनुसार ‘पढ़ना’ मात्र किसी बात की शब्दात्मकता से अर्थ की उद्धरण कर पाएं और कहीं गई बात के निहितार्थ को भी चेतावनी पाएं।
प्रारंभिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल

अथ्थ की खोि का दोहराि 'अथ्थ की खोि' का प्रमार बन िाता है। पढ़नी का यह दोहराि 'अथ्थ की खोि' का प्रमार बन िाता है। पढ़नी का यह दोहराि 'अथ्थ की खोि' का प्रमार बन िाता है। पढ़नी का यह दोहराि 'अथ्थ की खोि' का प्रमार बन िाता है। पढ़नी का यह दोहराि 'अथ्थ की खोि' का प्रमार बन िाता है। पढ़नी का यह दोहराि 'अथ्थ की खोि' का प्रमार बन िाता है। पढ़नी का यह दोहराि 'अथ्थ की खोि' का प्रमार बन िाता है। पढ़नी का यह दोहराि 'अथ्थ की खोि' का प्रमार बन िाता है। पढ़नी का यह दोहराि 'अथ्थ की खोि' का प्रमार बन िाता है। पढ़नी का यह दोहराि 'अथ्थ की खोि' का प्रमार बन िाता है। पढ़नी का यह दोहराि 'अथ्थ की खोि' का प्रमार बन िाता है। पढ़नी का यह दोहराि 'अथ्थ की खोि' का प्रमार बन िाता है। पढ़नी का यह दोहराि 'अथ्थ की खोि' का प्रमार बन िाता है। पढ़नी का यह दोहराि 'अथ्थ की खोि' का प्रमार बन िाता है। पढ़नी का यह दोहराि 'अथ्थ की खोि' का प्रमार बन िाता है। पढ़नी का यह दोहराि 'अथ्थ की खोि' का प्रमार बन िाता है। पढ़नी का यह दोहराि 'अथ्थ की खोि' का प्रमार बन िाता है। पढ़नी का यह दोहराि 'अथ्थ की खोि' का प्रमार बन िाता है। पढ़नी का यह दोहराि 'अथ्थ की खोि' का प्रमार बन िाता है। पढ़नी का यह दोहराि 'अथ्थ की खोि' का प्रमार बन िाता है। पढ़नी का यह दोहराि 'अथ्थ की खोि' का प्रमार बन िाता है। पढ़नी का यह दोहराि 'अथ्थ की खोि' का प्रमार बन िाता है। पढ़नी का यह दोहराि 'अथ्थ की खोि' का प्रमार बन िाता है। पढ़नी का यह दोहराि 'अथ्थ की खोि' का प्रमार बन िाता है।
प्राथमिक स्तर पर भी बच्चों से यह अपेक्षा रहती है कि वे कही या लिखी गई बात पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकें और प्रश्न पूछ सकें। बच्चों की भाषा इस बात का प्रमाण है कि वे अपनी भाषा का व्याख्यान अच्छी तरह जानते हैं, परंतु व्याख्यान की संचेत समझ बनाने के लिए यह आवश्यक है कि बच्चों को उसके विविध पहलूओं की पहचान विविध पाठों के संदर्भ में और आचार-पास के परिसंहार से जोड़कर कराई जाए। भाषा के अलग-अलग तरह के प्रयोगों की ओर उनका ध्यान दिलाया जाए ताकि वे भाषा की बारीकियों को पकड़ सकें और अपनी भाषा में उनका उचित रूप से प्रयोग कर सकें। भाषा सीखने-सिखाने की प्रतिक्रिया और माहौल के संदर्भ में यह बात ध्यान में रखना जरूरी है कि एक स्तर पर की जाने वाली प्रतिक्रियाओं को अपने स्तर की कक्षाओं के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। कक्षावार का स्तरानुसार रोचक विषय-सामग्री का चयन किया जाए जिससे बच्चों को हिंदी भाषा की विभिन्न शैलियों और रूपों में परिचित होने और उनका प्रभावी प्रयोग करने के अवसर मिल सकें। रोचक और विविधतापूर्व बाल साहित्य का इस संदर्भ में विशेष महत्व है। भाषा संबंधी सभी क्षमताएं, जैसे — सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना एक-दूसरे से जुड़ी हुई होती हैं और एक-दूसरे के विकास में सहायक होती हैं। अतः, इसलिए अलग-अलग करके नहीं देखा जाए जाए जाए यहाँ यह समझना भी जरूरी होगा कि हिंदी भाषा संबंधी होने जो भाषा-संप्रावतत के बिंदू दिए गए हैं उनमें परसपर जुड़वाए हैं और एक से अधिक भाषाओं की क्षमताओं की जटिल रूप में प्रभावित होती है। किसी रचना को सुनकर अथवा पढ़कर उस पर गहन चर्चा करना, अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करना, प्रश्न पूछना रहने की शक्ति से भी जुड़ा है और इसके साथ ही सुनने-बोलने की क्षमता से भी। प्रतिक्रिया, विवेचनाओं की लिखने भरोसा अभिभावक किया जा सकता है। इस सात तरह भाषा की कक्षा में एक साथ सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना जुड़ता है। इस संबंधी बातों को ध्यान में रखने परसपर भाषाओं के संबंध में विशेष महत्व है। पाठ्य्या्थ संबंधी अपेक्षाओं को पूरी करने के लिए थोड़ी भूमिका होगी। सीखने के उपयुक्त प्रयोगों के बिना सीखने संबंधी अपेक्षित संप्रावतत नहीं की जा सकेगी।

पाठ्य्या्थ संबंधी अपेक्षाएँ
पाठ्य्या्थ संबंधी अपेक्षाओं को पूरे देश के बच्चों को ध्यान में रख कर (प्रथम भाषा के रूप में हिंदी पढ़ने वाले और दिल्ली स्थित भाषा के रूप में हिंदी पढ़ने वाले, दोनों) तैयार किया गया है।
कक्षा एक से पाँच तक —
- दूसरों की बातों को रचना के साथ और ध्यान से सुनना।
- अपने अनुभव-संसार और कल्पना-संसार को वैज्ञानिक और सहज दंग से अभिभवित करना।
- अलग-अलग संदर्भ में अपनी बात कहने की कोशिश करना (बोलकर/ इशारों से/ ‘साइन लैंगिक द्वारा/चित्र बनाकर।)
- रस-रूपसा सहसृष्टि करना, कहानियाँ अदालत को सुनने में रचना करने और उन्हें मजे से सुनना और सुनना।
- वस्त्र, सुनी और पढ़ी गई बातों को अपनी भाषा में कहना, उनके बारे में विचार करना और अपनी प्रतिक्रिया/टिप्पणी (सौंदर्य और लिखत रूप से) व्यक्त करना।
• सुनी और पढ़ी कहानियों और कविताओं को समझकर उन्हें अपने अनुभवों से जोड़ पाना तथा उन्हें अपने शाब्दों में कहना और लिखना।
• स्तरानुसार कहानी, कविता या अनुभव के स्तर पर किसी स्थिति का निष्कर्ष या उपाय निकालना।
• लिपि-चिह्नों को देखकर और उनकी ध्वनियों को सुनकर और समझकर उनमें सहसंबंध बनाते हुए लिखने का प्रयास करना।
• चित्र और संदर्भ के आधार पर अनुमान लगाते हुए पढ़ना।
• पढ़ने की प्रक्रिया को दैनिक जीवन की (स्कूल और बाहर की) जरूरतों से जोड़ना, जैसे – कक्षा और स्कूल में अपना नाम, पाठ्यपुस्तक का नाम और अपनी मनसंद पाठ्यसामग्री पढ़ना।
• सुनी और पढ़ी गई बातों को समझकर उन्हें अपने शब्दों में कहना और लिखना।
• विचारों को स्वयं की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाना।
• पुस्तकालय और विभिन्न सोरों (रीढ़ों, पोस्टर, तरह-तरह की चीजों के रैपर, बाल पत्रिकाएँ, साइड लेबेल, ब्रैंड लिपि आदि) से अपनी पसंद की किताबें/सामग्री दूबाकर पढ़ना।
• अलग-अलग विषयों पर और अलग-अलग उद्देश्यों के लिए लिखना।
• अपनी लघुसंध के आधार पर अक्षर-अक्षर उद्देश्यों के लिए सुनकर अपनी मनसंद लघुसंध का अर्थ जानना।
• मनसंद विषय का जुटाव करके लिखना।
• विभिन्न विषय-चिह्नों का समझ के साथ प्रयोग करना।
• संदर्भ और लिखने के उद्देश्य के अनुसार उपयुक्त भाषा (शब्दों, वाक्यों आदि) का चयन और प्रयोग करना।
• नए शब्दों को चित्र-शब्दकोश/शब्दकोश में देखना।
• भाषा की लघु और तुक्त की समझ होना तथा उसका प्रयोग करना।
• घर और विद्यालय की भाषा के बीच संबंध बनाना।
<table>
<thead>
<tr>
<th>सीखने-सिखाने की प्रक्रिया</th>
<th>सीखने के प्रतिफल (Learning Outcomes)</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>• अपनी भाषा में अपनी बात कहने, बात करने की भरपूर आज़ादी और अवसार हो। अपनी बात करने (भाषिक और सांणिक माध्यम से) के लिए अवसार एवं प्रोत्साहन हो।</td>
<td>• विचित्र उद्धरणों के लिए अपनी भाषा अध्वना/और स्कूल की भाषा का इतिसंभाल करते हुए बातचीत करते हैं, जैसे – कविता, कहानी सुनना, जानकारी के लिए प्रश्न पूछना, निजी अनुभवों का साझा करना।</td>
</tr>
<tr>
<td>• बच्चों में भाषा में कहीं गई बातों की हिंदी भाषा और अन्य भाषाओं (जो भाषाएँ कक्षा में मौजूद हैं या जिन भाषाओं के बच्चे कक्षा में हैं) में दोहराने के अवसार उपलब्ध हो।</td>
<td>• सूनी सामग्री (कहानी, कविता आदि) के बारे में बातचीत करते हैं, अपनी राय देते हैं, प्रश्न पूछते हैं।</td>
</tr>
<tr>
<td>कहानी, कविता आदि को बालकर सुनाने के अवसार हों और उस पर बातचीत करने के अवसार हो।</td>
<td>• भाषा में मिउखित धार्मिक और शारीर के साथ खेलने का आनंद लेते हैं, जैसे – इन्तं, बिना, लिना।</td>
</tr>
<tr>
<td>• प्रश्न पूछने एवं अपनी बात जोड़ने के अवसार उपलब्ध हो।</td>
<td>• प्रिंट (लिखा या छपा हुआ) और ग्री-प्रिंट सामग्री (जैसे, चित्र या अन्य प्राकृतिक) में अंदर करते हैं।</td>
</tr>
<tr>
<td>• कक्षा अथवा विद्यालय (पढ़ने का कोना/पुस्तकालय) में स्थानानुसार विचित्र उद्धरण की एवं विचित्र भाषाओं (बच्चों की अपनी भाषा/एं, हिंदी आदि) में रोचक सामग्री, जैसे – बाल साहित्य, बाल पत्रिकाएँ, पोस्टर, ओवर-वीडियो तथा सामग्री उपलब्ध हो।</td>
<td>• चित्र के सूत्र और प्रत्यक्ष पहलुओं पर बारीक अनुसूचक करते हैं।</td>
</tr>
<tr>
<td>• ग्रंथ पूर्णे एवं अपनी बात जोड़ने के अवसार उपलब्ध हो।</td>
<td>• चित्र में ब्रांचवार सजाए पिंटों में घट रही अलग-अलग घटनाओं, गतिविधियों और पात्रों को एक सदर्भ या कहानी के सूत्र में देखकर समझते हैं और सराहना करते हैं।</td>
</tr>
<tr>
<td>• बच्चों के लिए सुनी गई बातों को वहंदी भाषा और अन्य भाषाओं (िो भाषाएँ कक्षा में मौजूद हैं या विन भाषाओं कक्षा में हैं) में दोहराने के अवसार उपलब्ध हो।</td>
<td>• पहली कहानी, कविताओं आदि में लिपि चिह्नों/शब्दों/वाक्यों आदि को देखकर और उनकी धार्मिक और अन्य भाषाओं को सुनकर, समझकर उनकी पहचान करते हैं।</td>
</tr>
<tr>
<td>• प्रश्न पूछने एवं अपनी बात जोड़ने के अवसार उपलब्ध हो।</td>
<td>• संदर्भ की मदद सच्चे आस-पास मौजूद विभिन्न प्रति के अर्थ और उद्धरण का अनुमान लगाते हैं, जैसे – टॉफ़ी के कहने पर लिखे नाम को ‘टॉफ़ी’, ‘लॉलीपॉप’ या ‘्ॉकलचेट’ बताता।</td>
</tr>
<tr>
<td>• पत्र/पत्रिका को रोचक सामग्री (जैसे, पत्र-पत्रिका का आवार, अपना नाम, कक्षा का नाम, वर्तमान चरित्र का शीर्षक आदि) में लिखा लेते हैं, जैसे – मेरा नाम निम्नलिखित है। बातचीत, यह कहाँ लिखा हुआ है?।</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>• पत्र (लिखा या छपा हुआ) में मौजूद अक्षर, शब्द और वाक्य की इकाईयों को पहचानते हैं, जैसे – ‘मेरा नाम निम्नलिखित है।’ बताओ, यह कहाँ लिखा हुआ है?।</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>• परिचित/अपरिचित लिखित सामग्री (जैसे – प्रिंट-डे मील का चार्ट, अपना नाम, कक्षा का नाम, मनससंद किताब का शीर्षक आदि) में रचना दिखाते हैं, बातचीत करते हैं और अर्थ की खोज में विचित्र प्रकार की युक्तियों का इतिसंभाल करते हैं, जैसे – केवल पिंटों या पिंटों और प्रिंट की मदद से अनुमान लगाना, अक्षर-धार्मिक संबंध का इतिसंभाल करना, शारीर की पहचान करना, पूर्व अनुभव के आधार की पहचान करते हुए अनुमान लगाना।</td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>
• बच्चे अक्षरों की आकृति बनाना शुरू करते हैं भले ही उनके द्वारा बनाए गए अक्षरों में सुधार न हो – इसे कक्षा में स्वीकार किया जाए।

• बच्चों द्वारा अपनी वर्तनी गढ़ने की प्रवृत्ति को भाषा सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा समझा जाए।

• हिंदी के वर्णमाला के अक्षरों की आकृति और ध्वनि को पहचानते हैं।

• स्कूल के बाहर और स्कूल के भीतर (पुस्तक कोना/पुस्तकालय से) अपनी पत्रिका की किताबों को स्वयं चुनते हैं और पढ़ने की कोशिश करते हैं।

• लिखना सीखने की प्रक्रिया के दौरान अपने विकासात्मक तरीके के अनुसार चित्रों, आड़ी-तरंगी रेखाओं (कीर्ण-काटे), अक्षर-आकृतियों, स्व-वर्तनी (इनवेंटिड स्लिंग) और स्व-निर्दिष्ट लेखन (कनवेशनल राइटिंग) के माध्यम से सुनिए हुई और अपने मन की बातों को अपने तरीके से लिखने का प्रयास करते हैं।

• स्वयं बनाए गए चित्रों के नाम लिखते (लेबलिंग) हैं, जैसे – हाथ के बने पंख का चित्र बनाकर उसके नीचे ‘बीजना’ (ब्रजभाषा, जो कि बच्चे की पह की भाषा हो सकती है।) लिखना।
### सीखने-सिखाने की प्रक्रिया

सभी शिक्षाविद्याओं (भिन्न रूप से सक्षम बच्चों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोफेसर दिया जाए ताकि उन्हें—

- अपनी भाषा में अपनी बात कहने, बातीत करने की भरपूर आत्मविश्वास और असर हो।
- हिंदी में सूची गई बात, कविता, कहानी को अपने तरीके और अपनी भाषा में कहने-सुनाने/पढ़ने पूर्व एवं अपनी बात जोड़ने के अवसर उपलब्ध हों।
- बच्चों द्वारा अपनी भाषा में कही गई बातों को हिंदी भाषा और अन्य भाषाओं (जो भाषाएं कक्षा में मौजूद हैं जैसे संस्कृत, बाल साहित्य) की तरह साझा करने का अवसर मिल सके।
- “पढ़ने का कोणा” में स्थानानुसार विभिन्न प्रकार की और विभिन्न भाषाओं (बच्चों की अपनी भाषा/एँ, हिंदी आदि) में रोचक सामग्री, जैसे - बाल साहित्य, बाल पत्रिकाएँ, पोस्टर, ओडियो-वीडियो सामग्री उपलब्ध हो।
- चित्रों के आधार पर अनुमान लगाकर तरह-तरह की कहावतों, कविताओं को पढ़ने के अवसर उपलब्ध हो।
- विभिन्न उद्देश्यों को धयान सुनकर अपनी भाषा में बताते/सुनाते हैं।

### सीखने के प्रतिफल (Learning Outcomes)

बच्चे—

- विविध उद्देश्यों के लिए अपनी भाषा अथवा/और स्कूल की भाषा का इस्तेमाल करते हुए बातचीत करते हैं, जैसे - जानकारी पाने के लिए, दृश्य पूछने, निजी अनुभवों को साझा करना, अपना तर्क देना।
- कहीं जा रही बात, कहानी, कविता आदि को ध्यान से सुनकर अपनी भाषा में बताते/सुनाते हैं।
- हिंदी, सूची बातों, कहानी, कविता आदि के बारे में बातचीत करते हैं और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।
- अपनी निजी जिंदगी और परिवेश पर अधिकरण अनुभवों को सुनाते जा रही सामग्री, जैसे - कविता, कहानी, पोस्टर, बिज्ञान आदि से जोड़ते हुए बातचीत में शामिल करते हैं।
- भाषा में निहित शब्दों और धार्मिक सामग्री के साथ खेल का मजा लेते हुए लघु और तुक बातें बनाते हैं, जैसे - एक बार पहाड़, उसका भाई या दहाड़, दोनों गए खेलने ....
- अपनी केल्पना से कहानी, कविता आदि कहते/सुनाते हैं/आगे बढ़ते हैं।
- अपने तर्क और पसंद के अनुसार कहानी, कविता, चित्र, पोस्टर आदि का बनावट सक्लें करते हैं।
- सुनी, दृष्टी और एक संबंध भाषा में इस्तेमाल करते हैं।
- इससे अनुभव बनाने के तरीके को कहानी, कविता, अनुभव, व्यक्ति से समझते हैं।
- अपनी क्रिया सक्लें की खोज, अनुभवों को साझा करते हैं, जैसे - 'मेरा नाम विमला है।' बताओ, इस बात को कैसे उपलब्ध करते हैं?
- प्रिंट (लिखता या छिपा हुआ) में भुजांतु अर्थ, जनता और वाक्य की इन्काइयों की अध्यादेश का समझते हैं, जैसे - ‘नाम’ शब्द में कितने अक्षर हैं या ‘नाम’ शब्द में कैसे भी कर अक्षर हैं?
प्रारंभिक स्तर पर सीखने के प्रभाव

- सही ओर उद्देश्य के अनुसार उपयुक्त शब्दों और वाक्यों का चयन करने, उनकी संरचना करने के अवसर उपलब्ध हैं।

- हिंदी के वर्णमाला के अक्षरों की आकृति और ध्वनि को पहचानते हैं।

- स्कूल के बाहर और स्कूल के भीतर (पुस्तक कोना/पुस्तकालय से) अपनी पसंद की किताबें को स्वयं चुनकर पढ़ने का प्रयास करते हैं।

- स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तय गतिविधि के अंतर्गत चित्रों, आड़ी-तिरंगी रेखाओं (कीर्ण-कटी), अक्षर-आकृतियों से आगे बढ़ते हुए स्व-सीधी का उपयोग और स्व-निर्यातित लेखन (कनवेशनल राइटिंग) करते हैं।

- सुनी हुई और अपने मन की बातों को अपने तरीके से और तरह-तरह से चित्रों/शब्दों/वाक्यों द्वारा (लिखित रूप से) अभिव्यक्त करते हैं।

- अपनी निजी जीवनी और परिवेश पर आधारित अनुभवों को अपने लेखन में शामिल करते हैं।

- अपनी कल्पना से कहानी, कविता आदि आगे बढ़ाते हैं।
### कक्षा तीन (हिंदी)

<table>
<thead>
<tr>
<th>सीखने-सिखाने की प्रक्रिया</th>
<th>सीखने के प्रतिफल (Learning Outcomes)</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>सभी शिष्यों (भिन्न रूप से सक्षम बच्चों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रक्रियाओं का व्यज्ञान दिया जाए, ताकि उन्हें –</td>
<td>कहरी जा रही बात, कहानी, कविता आदि को ध्यान से समझ ले, व्यक्तिक्रिया व्यक्त करते हैं।</td>
</tr>
<tr>
<td>अपनी भाषा में अपनी बात कहने, बात करने की भंगूरू आजादी और अवसर हों।</td>
<td>कहानी, कविता आदि को उपयुक्त उतार-चढाव, गति, प्रवाह और सही पुट के साथ सुनते हैं।</td>
</tr>
<tr>
<td>हिंदी में सुनी गई बात, कविता, कहानी आदि को अपने तरीके और अपनी भाषा में कहने-सुनने/प्रश्न पूछने एवं अपना बाल जोड़ने, प्रक्रियाओं का अवसर उपलब्ध हों।</td>
<td>सूनी हुई रचनाओं की विषय-वस्तु, पट्टो के रूप में बातचीत करते हैं, प्रश्न पूछते हैं, अपनी प्रतिक्रिया देते हैं।</td>
</tr>
<tr>
<td>बच्चों द्वारा अपनी भाषा में कही गई बातों को हिंदी भाषा और अन्य भाषाओं (जो भाषाएँ कक्षा में मौजूद हैं या जिन भाषाओं के बच्चों कक्षा में हैं) में दोहराने का अवसर हो। इससे भाषाओं को कक्षा में सम्पूर्ण स्वास्थ्य मिल सकेगा और उनके बाल-बच्छ, अभिव्यक्तियों का भी विकास करने के अवसर मिल सकेंगे।</td>
<td>आस-पास होने वाली गतिविधियों/ठनाओं और विभिन्न स्थितियों में हुए अपने अनुभव के बारे में बताते, बातचीत करते और प्रश्न पूछते हैं।</td>
</tr>
<tr>
<td>“पढ़ने का कोना”/पुस्तकालय में स्पष्ट करिकाल की रोचक सामग्री, जैसे – बाल साहित्य, बाल पत्रिकाएँ, पोस्टर, ऑडियो-वीडियो सामग्री मिल सकेंगे।</td>
<td>कहानी, कविता आदि को उपयुक्त उतार-चढ़ाई, गति, प्रवाह और सही पुट के साथ सुनते हैं।</td>
</tr>
<tr>
<td>तरह-तरह की कहानियाँ, कविताओं, पोस्टर, आदि को चित्रों और संदर्भ के आधार पर समझने-समझाने के अवसर उपलब्ध हों।</td>
<td>अलग-अलग तरह की रचनाओं/सामग्री (अखबार, बाल पत्रिका, होर्डिंग आदि) को समझकर पढ़ने के बाद उस पर आधारित प्रश्न पूछते हैं।</td>
</tr>
<tr>
<td>विभिन्न उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए, पढ़ने के विभिन्न आयामों को कक्षा में उचित स्वास्थ्य देने के अवसर उपलब्ध हों, जैसे – किसी कहानी में किसी जानकारी को खोजना, किसी जानकारी को निकालना, किसी पट्टा या पत्र के संदर्भ में तर्क, अपनी राय देना पाना आदि।</td>
<td>अलग-अलग तरह की रचनाओं में आए नए सामग्री के संदर्भ में समझकर उनका अर्थ सुनिश्चित करते हैं।</td>
</tr>
<tr>
<td>सूनी, डेढ़ बार को अपने तरीके से, अपनी भाषा में लिखने के अवसर हों।</td>
<td>तरह-तरह की कहानियाँ, कविताओं/रचनाओं की भाषा की बारीकियों (जैसे – शब्दों की पुनरार्जित, संज्ञा, सर्नाम, विभिन्न विचार-विचारों का प्रयोग आदि) की फलन कर्ता/य लिखते हैं।</td>
</tr>
<tr>
<td>अपनी भाषा गढ़ने (नए शब्द/वाक्य/अभिव्यक्तियाँ बनाने) और उनका इस्तेमाल करने के अवसर हों।</td>
<td>स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तथा गतिविधियों के अंतर्गत बच्चने के प्रति सम्बन्ध होते हुए स्व-नियमित लेखन (कन्वेंशनल राइटिंग) करते हैं।</td>
</tr>
<tr>
<td>संदर्भ और उद्देश्य के अनुसार उपयुक्त शब्दों और वाक्यों का चयन करने, उनकी संपादन करने के अवसर उपलब्ध हों।</td>
<td>विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते हुए, अपने लेखन में शब्दों के चुनाव, बाक्य संरचना और लेखन के स्वरूप (जैसे – दोष का पत्ता लिखना, पत्रिका के संसाधन को पत्र लिखना) को लेकर निर्णय लेते हुए लिखते हैं।</td>
</tr>
<tr>
<td>अपना पत्रकार, विश्वास, मोहल्ला, खेल का मैदान, गांव की चीपाल जैसे विषयों पर अपना स्वतंत्र विषय का चुनाव कर अनुभवों को लिखकर एक-दूसरे से शौको के अवसर हों।</td>
<td>स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तथा गतिविधियों के अंतर्गत बच्चने के प्रति सम्बन्ध होते हुए स्व-नियमित लेखन (कन्वेंशनल राइटिंग) करते हैं।</td>
</tr>
</tbody>
</table>
• एक-दूसरे की लिखी हुई रचनाओं को सुनने, पढ़ने और उन पर अपनी राय देने, उनमें अपनी बात को जोड़ने, बढ़ाने और अलग-अलग ढंग से लिखने के अवसर हैं।

• विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते हुए अपने लेख में विराम-चिह्नों, जैसे- पूर्ण विराम, अल्प विराम, प्रश्नवाचक चिह्न का सचेत्व इस्तेमाल करते हैं।

• अलग-अलग तरह की रचनाओं/सामग्री (अखबार, बाल पत्रिका, होरिंड्रिस आदि) को समझने के बाद उस पर अपनी प्रतिक्रिया लिखते हैं, पूछे गए प्रश्नों के उत्तर (लिखित/ ब्रेल लिपि आदि में) देते हैं।
कक्षा चार (हिंदी)

<table>
<thead>
<tr>
<th>सीखने-सिखाने की प्रक्रिया</th>
<th>सीखने के प्रतिफल (Learning Outcomes)</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>सभी शिक्षार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम व्यक्तित्व) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाए, ताकि उन्हें –</td>
<td>बच्चे –</td>
</tr>
<tr>
<td>• विभिन्न विषयों, स्थितियों, घटनाओं, अनुभवों, कहानियों, कविताओं आदि को अपने तरीके और अपनी भाषा में कहने- सुनने/प्रश्न पूछने एवं अपनी बात जोड़ने के अवसर उपलब्ध हों।</td>
<td>• दूसरों द्वारा कही जा रही बात को ध्यान से सुनकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने और प्रश्न पूछते हैं।</td>
</tr>
<tr>
<td>• “चले का कोना”/पुस्तकालय में स्टार्टयूसर विभिन्न प्रकार की रोचक सामग्री, जैसे – बाल साहित्य, बाल पत्रिकाएं, पोस्टर, ऑडिओ-वीडियो सामग्री, अखबार, आदि उपलब्ध हों।</td>
<td>• सुगी रचनाओं की विषय-वस्तु, घटनाओं, चित्रों, पात्रों, शैलीकर्म आदि के अर्थ में बातचीत करते हैं। प्रश्न पूछते हैं, अपनी राय देते हैं, अपनी बात के लिए तर्क देते हैं।</td>
</tr>
<tr>
<td>• तर-तरह की कहानियों, कविताओं, पोस्टर आदि को पढ़कर समझने-समझने, उस पर अपनी प्रतिक्रिया देने, बातचीत करने, प्रश्न करने के अवसर उपलब्ध हों।</td>
<td>• कहानी, कविता अथवा अन्य सामग्री को अपनी तरह से अपनी भाषा में कहते हुए उसमें अपनी कहानी/बात जोड़ते हैं।</td>
</tr>
<tr>
<td>• विभिन्न उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए, पढ़ने के विभिन्न आयामों को कक्षा में उचित रूप से देने के अवसर उपलब्ध हों, जैसे – किसी घटना या पत्र के संबंध में अपनी प्रतिक्रिया, राय, तर्क देना, विचार-विचार करना, आदि।</td>
<td>• भाषा की कहानियों/बातों को पढ़ने देते हुए, अपनी भाषा गढ़ते और उसका संबंध बनाते हैं।</td>
</tr>
<tr>
<td>• कहानी, कविता आदि को बोलते हुए पढ़ने-सुनने और सुनी, देखी, पढ़ी बातों को अपने तरीके से, अपनी भाषा में कहने और लिखने (भावजन्वत और सांकेतिक माध्यम से) के अवसर एवं प्रोत्साहन उपलब्ध हों।</td>
<td>• विभिन्न पुस्तकों से इस्तमाल की सामग्री (बाल साहित्य/समाचार पत्र के मुख्य शैली, बाल पत्रिका, हॉर्रिम आदि) को समझकर पढ़ते हैं।</td>
</tr>
<tr>
<td>• ज्ञात और संबंध के अनुसार अपनी भाषा गढ़ने (नए शब्द/बातों/अभिव्यक्तियों बनाने) और उनका संबंध करने के अवसर उपलब्ध हों।</td>
<td>• अपना-अलग तरह की रचनाओं में आए नए शब्दों को संबंध में समझकर उनका अर्थ ग्रहण करते हैं।</td>
</tr>
<tr>
<td>• एक-दूसरे की लिखी हुई रचनाओं को सुनने, पढ़ने और उस पर अपनी राय देने, जैसे पत्र, बाल पत्रिका, आदि करते हैं।</td>
<td>• पढ़ने के प्रति उत्सुक रहते हैं और पुस्तक कोना/पुस्तकालय से अपनी पसंद की कहानियों से मुख्य सुनकर पढ़ते हैं।</td>
</tr>
<tr>
<td>• अपनी बात को अपने हांग के समान-तरीके से अभिव्यक्त (मौखिक, लिखित, सांकेतिक रूप से) करने की आजादी है।</td>
<td>• पढ़ी रचनाओं की विषय-वस्तु, घटनाओं, चित्रों, पात्रों, शैलीकर्म आदि के अर्थ में बातचीत करते हैं। प्रश्न पूछते हैं, अपनी राय देते हैं, अपनी बात के लिए तर्क देते हैं।</td>
</tr>
<tr>
<td>• आस-पास होने वाली गतिविधियों/घटनाओं (जैसे – मेरे पास किसी छात्र के सूजन की छलांग नहीं दिखाई दी) से समान-तरीके से बात करते हैं।</td>
<td>• स्टार्टयूसर अन्य विषयों, व्यक्तियों, कलाओं आदि (जैसे – गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, नृत्यकला, चित्रकला आदि) में प्रयत्न होने वाली साहित्यवस्तु की सहायता करते हैं।</td>
</tr>
<tr>
<td>• अपनी पसंद की वक्ताबों को सुनने-सुनाने के अवसर पर ध्यान किए जाने के अवसर हों, जैसे – आम, रोटी, तोता आदि शब्दों को अपनी-अपनी भाषा में कहकर जाने के अवसर उपलब्ध हों।</td>
<td>• भाषा की बारहिकुंज, जैसे – शब्दों की पुनरावृत्ति, सर्वनाम, विशेषण, लिंग, वचन आदि के प्रति संचार रहते हुए लिखते हैं।</td>
</tr>
<tr>
<td>कक्षा में अपने साथियों की भाषाओं पर गौर करने के अवसर हों, जैसे – आम, रोटी, तोता आदि शब्दों को अपनी-अपनी भाषा में कहकर जाने के अवसर उपलब्ध हों।</td>
<td>• किसी विषय पर लिखकर शब्दों के बारे में अंतर को समझते हुए सराहत हैं और शब्दों का उपयुक्त प्रयोग करते हुए लिखते हैं।</td>
</tr>
</tbody>
</table>
• विषय-वस्तु के संदर्भ में भाषा की बारीकियाँ और उसकी
नियमबद्ध प्रकृति को समझने और उनका प्रयोग करने के अवसर
हों।
• अन्य विषयों, व्यवसायों, कलाओं आदि (जैसे – गणित, विज्ञान,
सामाजिक अध्ययन, नृपत्तियों, विज्ञान आदि) में प्रयुक्त होने
बाली शब्दावली को समझने और उसका संदर्भ एवं स्थिति के
अनुसार इस्तेमाल करने के अवसर हों।
• पाठ्यपुस्तक और उससे इतर सामग्री में आए प्राकृतिक,
सामाजिक एवं अन्य संवेदनशील बिंदुओं को समझने और उन
पर चर्चा करने के अवसर उपलब्ध हों।

• विभिन्न स्थितियों और उद्देश्यों (क्लास क्वार्टर या लगाई जाने
बाली सूचना, सामान की सूची, कविता, कहानी, चिट्ठी आदि)
के अनुसार लिखते हैं।
• स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तय गतिविधि के अन्तर्गत लेखन की
प्रक्रिया की बेहतर समझ के साथ अपने लेखन को जीतते हैं
और लेखन के उद्देश्य और पाठक के अनुसार लेखन में बदलाव
करते हैं।
• अलग-अलग तरह की रचनाओं में आए नए शब्दों को संदर्भ में
समझकर उनका लेखन में इस्तेमाल करते हैं।
• विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते हुए, अपने लेखन में विराम-
चिह्नों, जैसे – पूर्ण विराम, अत्य विराम, प्रश्नवाचक पिंड का
सचेत इस्तेमाल करते हैं।
• अपनी कल्पना से कहानी, कविता, वर्णन आदि लिखते हुए,
भाषा का सृजनात्मक प्रयोग करते हैं।
<table>
<thead>
<tr>
<th>सीखने-सिखाने की प्रक्रिया</th>
<th>सीखने के प्रतिफल (Learning Outcomes)</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td><strong>कक्षा पाँच (हिंदी)</strong></td>
<td><strong>बच्चे</strong> –</td>
</tr>
</tbody>
</table>
| सभी शिक्षार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम वचनों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रारंभिक विद्यार्थी के लिए, ताकि उनके – | सुनी अथवा पढ़ी रचनाओं (हायव, साहित्य, सामाजिक आदि विषयों पर आधारित कहानियाँ, कविताएँ) की विषय-वस्तु, घटनाओं, चित्रों और पत्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं। प्रश्न पूछते हैं।
| विभिन्न विषयों, स्थितियों, घटनाओं, अनुभवों, कहानियों, कविताओं आदि को अपने तरीके और अपनी भाषा में (मौखिक/लिखित/सांकेतिक रूप से) कहने-सुनने/प्रश्न पूछने, टिप्पणी करने, अपनी राय देने की आजादी हो। | प्रश्न पूछते हैं।
| पुस्तकालय/कक्षा में अलग-अलग तरह की कहावतें, कविताएं/बाल साहित्य, स्मारक साहित्य, साइनबोर्ड, होर्डिंग, अखबारों की कहाँ करने उनके अस-पास के परिसंपत्ति में उपलब्ध हों और उन पर चर्चा करने के मौके हों। | प्रश्न पूछते हैं।
| सुनी, देखी, पढ़ी बातें को अपने तरीके और अपनी भाषा में (मौखिक/वलक्ष्य/सांकेतिक रूप से) कहने-सुनने/प्रश्न पूछने, व्यक्त बनाने, अपनी राय देने की मदद करते हैं। | प्रश्न पूछते हैं।
| विषय-वस्तु के संस्कार के अनुसार समझने समझाने के अस-पास उपलब्ध हों। | प्रश्न पूछते हैं।
| तरह-तरह की कहानियाँ, कविताएँ, पोस्टर आदि को संस्कार के अनुसार पढ़ने, समझने के अवसर उपलब्ध हों। | प्रश्न पूछते हैं।
| सूनी, देखी, पढ़ी बातें को अपने तरीके से, अपनी भाषा में लिखने के अवसर हों। | प्रश्न पूछते हैं।
| विभिन्न विषयों और संस्कार के अनुसार अपनी भाषा गढ़ते हैं (नए शब्द/वाक्य/अभिव्यक्तियाँ बनाने) और उनका इस्तेमाल करने के अवसर हों। | प्रश्न पूछते हैं।
| एक-दूसरे की लिखी हुई रचनाओं को सुनने, पढ़ने और उस पर अपनी राय लेने, उसमें अपनी बात को जोड़ने, बढ़ाने और अलग-अलग हांग से लिखने के अवसर हों। | प्रश्न पूछते हैं।
| आस-पास होने वाली गतिविधियों/घटने वाली घटनाओं को लेकर प्रश्न करने, बच्चों से बातचीत या चर्चा करने, टिप्पणी करने, राय देने के अवसर उपलब्ध हों। | प्रश्न पूछते हैं।
| विषय-वस्तु के संस्कार में भाषा की बारीकीयों और उसकी नियममात्र प्रकृति को समझने और उनका प्रयोग करने के अवसर हों। | प्रश्न पूछते हैं।
| नए शब्दों की व्यवस्था शब्दकोश/शब्दकोश में देखने के अवसर उपलब्ध हों। | प्रश्न पूछते हैं।
| अन्य विषयों, व्यवसायों, कलाओं आदि (जैसे – गणित, विज्ञान, सामाजिक आध्यात्म, नृत्यकला, चिकित्सा आदि) में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली को समझने और उसका संदर्भ एवं रिच्यू के अनुसार इस्तेमाल करने के अवसर हों। | प्रश्न पूछते हैं।

या सिद्धांतों के अनुसार समझते हैं और उनका अपने लक्ष्य में बदलाम लाए।
• पाठ्यपुस्तक और उससे इतर सामग्री में आए प्राकृतिक, सामाजिक एवं अन्य संवेदनशील मुद्दों को समझने और उन पर चर्चा करने के अवसर उपलब्ध हों।

• भाषा की व्याकरणिक इकाइयों (जैसे – कारक-चिह्न, क्रिया, काल, विलोम आदि) की पहचान करते हैं और उनके प्रति संवेदनशील रहते हुए लिखते हैं।

• विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते हुए अपने लेखन में विराम-चिह्नों, जैसे – पूर्ण विराम, अन्त्य विराम, प्रत्ययक चिह्न, उद्दरण चिह्न का संचेत स्थापन करते हैं।

• स्वाभाविक अन्य विषयों, व्यक्तियों, कलाओं आदि (जैसे – गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, नृत्यकला, चिकित्सा आदि) में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली को समझते हैं और संदर्भ एवं स्थिति के अनुसार उनका लेखन में इस्तेमाल करते हैं।

• अपने आस-पास घटना वाली बारीकियों पर ध्यान देते हुए उन पर निकट रूप से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।

• उद्देश्य और संदर्भ के अनुसार शब्दों, वाक्यों, विराम-चिह्नों का उचित प्रयोग करते हुए लिखते हैं।

• पाठ्यपुस्तक और उससे इतर सामग्री में आए संवेदनशील बिंदुओं पर लिखित/श्रेणी लिपि में अभिव्यक्ति करते हैं।

• अपनी कथना से कहानी, कविता, पर आदि लिखते हैं। कविता, कहानी को आगे बढ़ाते हुए लिखते हैं।
Learning Outcomes for the English Language
Primary Stage

Introduction

Language learning progresses naturally with exposure to and use of language. Language learning becomes meaningful when it is connected with the immediate environment of children. The English language is generally taught and learnt as a second language in India, in varied contexts and resources. At the primary stage, the teacher would need to factor in the pace of learning of children and the opportunities of exposure to English that they may have in their home and school environment.

Broadly, the curricular expectation of English language learning is the attainment of a basic proficiency for meaningful communication. While the use of home language need not be punished or penalised, particularly in Classes I and II, progression towards more use of English needs to be encouraged. The teacher is required to focus on providing learning opportunities to all learners, including the differently-abled and the disadvantaged, and ensure an inclusive environment.

Based on the curricular expectations for English language learning at the primary stage, a set of Learning Outcomes for each class has been developed. Teaching letters of the alphabet in isolation, or memorisation without understanding, is to be avoided. Reading Corners/class libraries may be developed to provide children relevant, illustrated and age-appropriate children’s literature in English and home language. The teacher should observe children for assessment when they are engaged in activities, keeping in mind differently-abled children as well.

Errors should be viewed as attempts or stages of learning language. The teacher should facilitate stress-free correction through exposure to language input through story telling, input-rich environment, and above all, by providing a congenial atmosphere. The focus should be on developing interpersonal communication skills in English, and more importantly, a sensitivity towards languages and cultures other than their own.

In most places, children do not have exposure to English outside the classroom. The teacher’s proficiency in spoken English in these cases becomes all the more essential. Students may listen to English and process the new language, before they actually begin to communicate in English.
**Curricular Expectations**

Children are expected to

- acquire the skills of listening, speaking, reading, writing and thinking in an integrated manner.
- develop interpersonal communication skills.
- attain basic proficiency like, developing ability to express one’s thoughts orally and in writing in a meaningful way in English language.
- interpret and understand instructions and polite forms of expression and respond meaningfully both orally and in writing.
- develop reference skills both printed and electronic mode.
- acquire varied range of vocabulary; understand increased complexity of sentence structures both in reading and writing.
- express an awareness of social and environmental issues.
- read and interpret critically the texts in different contexts– including verbal (including Braille) and pictorial mode.
## Class I (English)

<table>
<thead>
<tr>
<th>Suggested Pedagogical Processes</th>
<th>Learning Outcomes</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td><strong>The learner may be provided opportunities in pairs or groups/ individually and encouraged to—</strong></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>- name common objects such as— man, dog etc. when pictures are shown</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>- use familiar and simple words (‘bat’, ‘pen’, ‘cat’) as examples to reproduce the starting sound and letter (/b/, /p/, /k/ etc)</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>- develop phonemic awareness through activities focusing on different sounds, emerging from the words in stories and texts</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>- sing or recite collectively songs or poems or rhymes with actions</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>- listen to stories, and humorous incidents and interact in English or home language</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>- ask simple questions like names of characters from the story, incidents that he/she likes in the story, etc. (Ensure clear lip movement for children with hearing impairment to lip read.)</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>- draw or scribble pictures and images from the story as preliminary to writing</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>- respond in home language or English or sign language or non-verbal expressions what he/she has understood in the story or poem</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>- listen to instructions and draws a picture</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>- Use greetings like “Good morning”, “Thank you” and have polite conversations in English such as “What is your name?”, “How are you?” etc.</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>- Say 2-3 sentences describing familiar objects and places such as family photographs, shops, parks etc.</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>- Give examples of common blend sounds in words like ‘brick’, ‘brother’, ‘frog’, ‘friend’ etc.</td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>

| **The learner—** |
| - associates words with pictures |
| - Names familiar objects seen in the pictures |
| - recognises letters and their sounds A—Z |
| - differentiates between small and capital letters in print or Braille |
| - recites poems/rhymes with actions |
| - draws, scribbles in response to poems and stories |
| - responds orally (in any language including sign language) to comprehension questions related to stories/poems |
| - identifies characters and sequence of a story and asks questions about the story |
| - carries out simple instructions such as ‘Shut the door’, ‘Bring me the book’, and such others |
| - listens to English words, greetings, polite forms of expression, simple sentences, and responds in English or the home language or ‘signing’ (using sign language) |
| - listens to instructions and draws a picture |
| - talks about self /situations/ pictures in English |
| - uses nouns such as ‘boy’, ‘sun’, and prepositions like ‘in’, ‘on’, ‘under’, etc. |
| - produces words with common blends like “br” “fr” like ‘brother’, ‘frog’ etc. |
| - writes simple words like fan, hen, rat etc. |
Class II (English)

<table>
<thead>
<tr>
<th>Suggested Pedagogical Processes</th>
<th>Learning Outcomes</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td><strong>The learner may be provided opportunities in pairs/groups/ individually and encouraged to—</strong></td>
<td><strong>The learner—</strong></td>
</tr>
<tr>
<td>• sing or recite collectively songs or poems or rhymes with action</td>
<td>• sings songs or rhymes with action</td>
</tr>
<tr>
<td>• listen to stories, and humorous incidents and interact in English or home language</td>
<td>• responds to comprehension questions related to stories and poems, in home language or English or sign language, orally and in writing (phrases/ short sentences)</td>
</tr>
<tr>
<td>• ask simple questions, for example, on characters, places, the sequence of events in the story, etc. (Ensure clear lip movement for children with hearing impairment to lip read.)</td>
<td>• identifies characters, and sequence of events in a story.</td>
</tr>
<tr>
<td>• respond orally in home language or English or sign language or non-verbal expressions</td>
<td>• expresses verbally her or his opinion and asks questions about the characters, storyline, etc., in English or home language.</td>
</tr>
<tr>
<td>• write 2-3 simple sentences about stories or poems</td>
<td>• draws or writes a few words or short sentence in response to poems and stories.</td>
</tr>
<tr>
<td>• look at scripts in a print rich environment like newspapers, tickets, posters etc.</td>
<td>• listens to English words, greetings, polite forms of expression, and responds in English/home language like ‘How are you?’, ‘I’m fine, thank you.’etc.</td>
</tr>
<tr>
<td>• develop phonemic awareness through activities focusing on different sounds, emerging from the words in stories and texts</td>
<td>• uses simple adjectives related to size, shape, colour, weight, texture such as ‘big’, ‘small’, ‘round’, ‘pink’ ‘red’ ‘heavy’ ‘light’ ‘soft’ etc.</td>
</tr>
<tr>
<td>• listen to short texts from children’s section of newspapers, read out by the teacher</td>
<td>• listens to short texts from children’s section of newspapers, read out by the teacher</td>
</tr>
<tr>
<td>• listen to instructions and draw a picture</td>
<td>• listens to instructions and draws a picture</td>
</tr>
<tr>
<td>• speak and write English, talk to their peers in English, relating to festivals and events at homes and schools</td>
<td>• uses pronouns related to gender like ‘his/ her/’, ‘he/she’, ‘it’ and other pronouns like ‘this/that’, ‘here/there’ ‘these/those’ etc.</td>
</tr>
<tr>
<td>• enrich vocabulary in English mainly through telling and re-telling stories/ folk tales</td>
<td>• uses prepositions like ‘before’, ‘between’ etc.</td>
</tr>
<tr>
<td>• use appropriately pronouns related to gender such as ‘he’, ‘she’, ‘his’, ‘her’, and demonstrative pronouns such as ‘this’, ‘that’, ‘these’, ‘those’; and prepositions such as ‘before’, ‘between’ etc.</td>
<td>• composes and writes simple, short sentences with space between words.</td>
</tr>
<tr>
<td>• read cartoons/ pictures/comic strips with or without words independently</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>• write 2-3 sentences describing common events using adjectives, prepositions and sight words like “This is my dog. It is a big dog. It runs behind me.”</td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>
### Class III (English)

<table>
<thead>
<tr>
<th><strong>Suggested Pedagogical Processes</strong></th>
<th><strong>Learning Outcomes</strong></th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td><strong>The learner may be provided opportunities in pairs/groups/ individually and encouraged to</strong>—</td>
<td><strong>The learner:</strong></td>
</tr>
<tr>
<td>• sing songs or recite poems in English with intonation</td>
<td>• recites poems individually/ in groups with correct pronunciation and intonation.</td>
</tr>
<tr>
<td>• participate in role play, enactment of skits</td>
<td>• performs in events such as role play/ skit in English with appropriate expressions</td>
</tr>
<tr>
<td>• read aloud short texts/ scripts on the walls, with pronunciation and pause</td>
<td>• reads aloud with appropriate pronunciation and pause</td>
</tr>
<tr>
<td>• listen to and communicate oral / telephonic messages</td>
<td>• reads small texts in English with comprehension i.e., identifies main idea, details and sequence and draws conclusions in English</td>
</tr>
<tr>
<td>• collect books for independent reading in English and other languages/Braille with a variety of themes (adventure, stories, fairy tales, etc.)</td>
<td>• expresses orally her/his opinion/understanding about the story and characters in the story, in English/ home language.</td>
</tr>
<tr>
<td>• read posters, tickets, labels, pamphlets, newspapers etc.</td>
<td>• responds appropriately to oral messages/ telephonic communication</td>
</tr>
<tr>
<td>• take dictation of words/phrases/ sentences/short paragraphs from known and unknown texts</td>
<td>• writes/types dictation of words/phrases/sentences</td>
</tr>
<tr>
<td>• draw and write short sentences related to stories read, and speak about their drawing or writing work</td>
<td>• uses meaningful short sentences in English, orally and in writing uses a variety of nouns, pronouns, adjectives and prepositions in context as compared to previous class</td>
</tr>
<tr>
<td>• raise questions on the text read</td>
<td>• distinguishes between simple past and simple present tenses</td>
</tr>
<tr>
<td>• enrich vocabulary in English through listening to and reading stories/folk tales</td>
<td>• identifies opposites like ‘day/night’, ‘close-open’, and such others</td>
</tr>
<tr>
<td>• use nouns, pronouns, adjectives and prepositions in speech and writing</td>
<td>• uses punctuation such as question mark, full stop and capital letters appropriately</td>
</tr>
<tr>
<td>• use terms such as ‘add’, ‘remove’, ‘replace’, etc., that they come across in Maths, and words such as ‘rain’, ‘build’ in EVS</td>
<td>• reads printed scripts on the classroom walls: poems, posters, charts etc.</td>
</tr>
<tr>
<td>• identify opposites and use in communication, for example ‘tall/short’, ‘inside/outside’, ‘fat/thin’ etc.</td>
<td>• writes 5-6 sentences in English on personal experiences/events using verbal or visual clues</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>• uses vocabulary related to subjects like Maths, EVS, relevant to class III.</td>
</tr>
<tr>
<td><strong>Suggested Pedagogical Processes</strong></td>
<td><strong>Learning Outcomes</strong></td>
</tr>
<tr>
<td>-----------------------------------</td>
<td>-----------------------</td>
</tr>
<tr>
<td><strong>The learner may be provided opportunities in pairs/groups/individually and encouraged to—</strong></td>
<td><strong>The learner—</strong></td>
</tr>
<tr>
<td>• participate in role play, enactment, dialogue and dramatisation of stories read and heard</td>
<td>• recites poems with appropriate expressions and intonation.</td>
</tr>
<tr>
<td>• listen to simple instructions, announcements in English made in class/school and act accordingly</td>
<td>• enacts different roles in short skits</td>
</tr>
<tr>
<td>• participate in classroom discussions on questions based on the day to day life and texts he/she already read or heard</td>
<td>• responds to simple instructions, announcements in English made in class/school</td>
</tr>
<tr>
<td>• learn English through posters, charts, etc., in addition to books and children’s literature</td>
<td>• responds verbally/in writing in English to questions based on day-to-day life experiences, an article, story or poem heard or read</td>
</tr>
<tr>
<td>• read independently and silently in English/Braille, adventure stories, travelogues, folk/fairy tales etc.</td>
<td>• describes briefly, orally/in writing about events, places and/or personal experiences in English</td>
</tr>
<tr>
<td>• understand different forms of writing (informal letters, lists, stories, diar entry etc.)</td>
<td>• reads subtitles on TV, titles of books, news headlines, pamphlets and advertisements</td>
</tr>
<tr>
<td>• learn grammar in a contextual and integrated manner and frame grammatically correct sentences</td>
<td>• shares riddles and tongue-twisters in English</td>
</tr>
<tr>
<td>• notice the use of nouns, pronouns, adjectives, prepositions and verbs in speech and writing and in different language activities.</td>
<td>• solves simple crossword puzzles, builds word chains, etc.</td>
</tr>
<tr>
<td>• notice categories and word clines</td>
<td>• infers the meaning of unfamiliar words by reading them in context</td>
</tr>
<tr>
<td>• enrich vocabulary in English mainly through telling and re-telling stories/folk tales</td>
<td>• uses dictionary to find out spelling and meaning</td>
</tr>
<tr>
<td>• start using dictionary to find out spelling and meaning</td>
<td>• writes/types dictation of short paragraphs (7-8 sentences)</td>
</tr>
<tr>
<td>• practise reading aloud with pause and intonation, with an awareness of punctuation (full stop, comma, question mark); also use punctuation appropriately in writing</td>
<td>• uses punctuation marks appropriately in reading aloud with intonations and pauses such as question mark, comma, and full stop</td>
</tr>
<tr>
<td>• infer the meaning of unfamiliar words from the context</td>
<td>• uses punctuation marks appropriately in writing such as question mark, comma, full stop and capital letters</td>
</tr>
<tr>
<td>• take dictation of words/phrases/sentences/short paragraphs from known and unknown texts</td>
<td>• writes informal letters or messages with a sense of audience</td>
</tr>
<tr>
<td>• be sensitive to social and environmental issues such as gender equality, conservation of natural resources, etc.</td>
<td>• uses linkers to indicate connections between words and sentences such as ‘First’, ‘Next’, etc.</td>
</tr>
<tr>
<td>• look at cartoons/pictures/comic strips with or without words and interpret them</td>
<td>• uses nouns, verbs, adjectives, and prepositions in speech and writing</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>• reads printed script on the classroom walls, notice board, in posters and in advertisements</td>
</tr>
</tbody>
</table>
• enrich vocabulary through crossword puzzles, word chain, etc.
• appreciates verbally and in writing the variety in food, dresses and festivals as read/heard in his/her day to day life and story book, seen in videos, films, etc.

• speaks briefly on a familiar issue like conservation of water; and experiences of day to day life like visit to a zoo; going to a mela
• presents orally and in writing the highlights of a given written text / a short speech / narration / video, film, pictures, photograph etc.
## Class V (English)

<table>
<thead>
<tr>
<th>Suggested Pedagogical Processes</th>
<th>Learning Outcomes</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td><strong>The learner may be provided opportunities in pairs/groups/ individually and encouraged to—</strong></td>
<td><strong>The learner—</strong></td>
</tr>
<tr>
<td>• discuss and present orally, and then write answers to text-based questions, short descriptive paragraphs</td>
<td>• answers coherently in written or oral form to questions in English based on day-to-day life experiences, unfamiliar story, poem heard or read.</td>
</tr>
<tr>
<td>• participate in activities which involve English language use, such as role play, enactment, dialogue and dramatisation of stories read and heard</td>
<td>• recites and shares English songs, poems, games, riddles, stories, tongue twisters etc, recites and shares with peers and family members.</td>
</tr>
<tr>
<td>• look at print-rich environment such as newspapers, signs and directions in public places, pamphlets, and suggested websites for language learning</td>
<td>• acts according to instructions given in English, in games/sports, such as 'Hit the ball!' 'Throw the ring.' 'Run to the finish line!' etc.</td>
</tr>
<tr>
<td>• prepare speech for morning assembly, group discussions, debates on selected topics, etc.</td>
<td>• reads independently in English storybooks, news items/ headlines, advertisements etc. talks about it, and composes short paragraphs</td>
</tr>
<tr>
<td>• infer the meaning of unfamiliar words from the context while reading a variety of texts</td>
<td>• conducts short interviews of people around him e.g interviewing grandparents, teachers, school librarian, gardener etc.</td>
</tr>
<tr>
<td>• refer to the dictionary, for spelling, meaning and to find out synonyms and antonyms</td>
<td>• uses meaningful grammatically correct sentences to describe and narrate incidents; and for framing questions</td>
</tr>
<tr>
<td>• understand the use of synonyms, such as ‘big/large’, ‘shut/ close’, and antonyms like inside/outside, light/dark from clues in context</td>
<td>• uses synonyms such as 'big/large', 'shut/ close', and antonyms like inside/outside, light/dark from clues in context</td>
</tr>
<tr>
<td>• relate ideas, proverbs and expressions in the stories that they have heard, to those in their mother tongue/surroundings/cultural context</td>
<td>• reads text with comprehension, locates details and sequence of events</td>
</tr>
<tr>
<td>• read independently and silently in English/ Braille, adventure stories, travelogues, folk/ fairy tales etc.</td>
<td>• connects ideas that he/she has inferred, through reading and interaction, with his/her personal experiences</td>
</tr>
<tr>
<td>• find out different forms of writing (informal letters, lists, stories leave application, notice etc.)</td>
<td>• takes dictation for different purposes, such as lists, paragraphs, dialogues etc.</td>
</tr>
<tr>
<td>• learn grammar in a context and integrated manner ( such as use of nouns, adverbs; differentiates between simple past and simple present verbs.)</td>
<td>• uses the dictionary for reference</td>
</tr>
<tr>
<td>• use linkers to indicate connections between words and sentences such as 'Then', ‘After that’, etc.</td>
<td>• identifies kinds of nouns, adverbs; differentiates between simple past and simple present verbs</td>
</tr>
<tr>
<td>• take dictation of sort texts such as lists, paragraphs and dialogues.</td>
<td>• writes paragraphs in English from verbal, visual clues, with appropriate punctuation marks and linkers</td>
</tr>
<tr>
<td>• enrich vocabulary through crossword puzzles, word chain etc.</td>
<td>• writes a ‘mini biography’ and ‘mini autobiography’</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>• writes informal letters, messages and e-mails</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>• reads print in the surroundings (advertisements, directions, names of places etc), understands and answers queries</td>
</tr>
<tr>
<td>Learning Outcomes for the English Language — Primary Stage</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>----------------------------------------------------------</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>• look at cartoons/ pictures/comic strips with or without words and speak/write a few sentences about them.</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>• write a ‘mini biography’ and ‘mini autobiography’</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>• attempts to write creatively (stories, poems, posters, etc)</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>• writes and speaks on peace, equality etc suggesting personal views</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>• appreciates either verbally / in writing the variety in food, dress, customs and festivals as read/heard in his/her day-to day life, in storybooks/ heard in narratives/ seen in videos, films etc.</td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>
(Learning Outcomes of Urdu Language for Classes I, II and III)

تماہی ہوئے دوشیماری اور تیزی میں حاضرتی کے لئے اورڈر وائیانا کا مضمونی جملہ

(曲學案期望)

ظاہرہ ہوئے ہوئے اورجیا نے لازمانی اور جنری کا مضمونی جملہ سے کی سماجی پیشکش کرتا ہے

گرمی میں گرمی جاتا ہے جس کا سماجی پیشکش کرتا ہے

کیا میں کپڑوں میں ہوئے ہوئے پیشکش کرتا ہے?

کے وہاروں کا تعلق کرتا ہے?

کیا میں کپڑوں میں ہوئے ہوئے پیشکش کرتا ہے?

آس پاس میں ہوئے ہوئے ہوئے پیشکش کرتا ہے?

گرمی میں گرمی جاتا ہے جس کا سماجی پیشکش کرتا ہے

کیا میں کپڑوں میں ہوئے ہوئے پیشکش کرتا ہے?

کے وہاروں کا تعلق کرتا ہے?

کیا میں کپڑوں میں ہوئے ہوئے پیشکش کرتا ہے?

آس پاس میں ہوئے ہوئے ہوئے پیشکش کرتا ہے?

گرمی میں گرمی جاتا ہے جس کا سماجی پیشکش کرتا ہے

کیا میں کپڑوں میں ہوئے ہوئے پیشکش کرتا ہے?

کے وہاروں کا تعلق کرتا ہے?

کیا میں کپڑوں میں ہوئے ہوئے پیشکش کرتا ہے?

آس پاس میں ہوئے ہوئے ہوئے پیشکش کرتا ہے?
### Learning Outcomes

1. **Reading**: Read a passage in urdu and translate it into english.
2. **Spelling**: Write words in urdu and translate them into english.
3. **Writing**: Write a story in urdu and translate it into english.
4. **Mathematics**: Solve simple addition problems in urdu.

### Suggested Pedagogical Process

1. **Introduction**: Introduce new vocabulary and grammar rules.
2. **Practice**: Have students practice reading and writing in urdu.
3. **Assessment**: Test students' understanding of the material.
4. **Feedback**: Provide feedback on students' work.

---

**Note**: This document is written in urdu and contains educational content for Class I students. It includes learning outcomes and suggested pedagogical processes. The document is designed to help students improve their skills in reading, writing, and understanding urdu.
<table>
<thead>
<tr>
<th>आर्थिक स्तर (Learning Outcomes)</th>
<th>शिक्षकों के गतिविधियों (Suggested Pedagogical Process)</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>ताला जगत में चौपली तिहोकर मात्रकों के बालक अभिनव और कौशल से सजा लें।</td>
<td>ताला जगत में चौपली तिहोकर मात्रकों के बालक अभिनव और कौशल से सजा लें।</td>
</tr>
<tr>
<td>बालकों के आर्थिक स्तर में भाग लें।</td>
<td>बालकों के आर्थिक स्तर में भाग लें।</td>
</tr>
<tr>
<td>ताला जगत में चौपली तिहोकर मात्रकों के बालक अभिनव और कौशल से सजा लें।</td>
<td>ताला जगत में चौपली तिहोकर मात्रकों के बालक अभिनव और कौशल से सजा लें।</td>
</tr>
<tr>
<td>बालकों के आर्थिक स्तर में भाग लें।</td>
<td>बालकों के आर्थिक स्तर में भाग लें।</td>
</tr>
<tr>
<td>ताला जगत में चौपली तिहोकर मात्रकों के बालक अभिनव और कौशल से सजा लें।</td>
<td>ताला जगत में चौपली तिहोकर मात्रकों के बालक अभिनव और कौशल से सजा लें।</td>
</tr>
<tr>
<td>बालकों के आर्थिक स्तर में भाग लें।</td>
<td>बालकों के आर्थिक स्तर में भाग लें।</td>
</tr>
<tr>
<td>ताला जगत में चौपली तिहोकर मात्रकों के बालक अभिनव और कौशल से सजा लें।</td>
<td>ताला जगत में चौपली तिहोकर मात्रकों के बालक अभिनव और कौशल से सजा लें।</td>
</tr>
<tr>
<td>बालकों के आर्थिक स्तर में भाग लें।</td>
<td>बालकों के आर्थिक स्तर में भाग लें।</td>
</tr>
<tr>
<td>ताला जगत में चौपली तिहोकर मात्रकों के बालक अभिनव और कौशल से सजा लें।</td>
<td>ताला जगत में चौपली तिहोकर मात्रकों के बालक अभिनव और कौशल से सजा लें।</td>
</tr>
<tr>
<td>बालकों के आर्थिक स्तर में भाग लें।</td>
<td>बालकों के आर्थिक स्तर में भाग लें।</td>
</tr>
</tbody>
</table>
(Class III)

Learning Outcomes

1. Understand the concept of environmental conservation.
2. Recognize the importance of recycling and reuse.
3. Identify common waste materials and their proper disposal methods.
4. Engage in practical activities related to waste management.

Suggested Pedagogical Process

1. Introduce the concept of waste management through interactive lectures.
2. Conduct hands-on activities to demonstrate recycling and reuse techniques.
3. Organize clean-up drives to encourage community participation.
4. Implement a recycling program in the classroom.

Eco-friendly practices

- Use reusable bags and water bottles.
- Reduce paper consumption by using digital resources.
- Encourage composting of organic waste.
- Promote the use of public transport.
- Use energy-efficient lighting and appliances.

Activities

1. Organize a waste audit in the school to identify waste types.
2. Create a recycling center in the classroom for paper, plastic, and glass.
3. Participate in a community clean-up drive.
4. Develop a poster campaign on waste management.

Conclusion

By implementing these practices, we can contribute to a cleaner, greener environment. Encourage everyone to join in and make a positive impact on our planet.
(Learning Outcomes of Urdu Language for Classes IV and V)

After studying this chapter, students will be able to:

- Spell words correctly.
- Use correct grammar rules.
- Expand vocabulary.
- Write short compositions.
- Read and understand simple texts.
- Speak fluently in Urdu.
- Participate in group discussions.

(Curricular Expectations)
(Class IV)

(میتو جماعت)

(learning outcomes)

(سیدگی کے فرہیش اوراحل)

(سuggested pedagogical process)

ظرفیت کو کئی توں بڑھایہ، چونکہ کچھ کمیاں موجود ہے۔

عمر اپنی میں اہم لحاظات کا کام کرے۔

آس پاس کی دیکھیں۔

اطری نواز ہوں۔

فوٹوں اوروارکیوں کے ذریعے دیکھیں۔

ورکس اورکارٹون کے ذریعے دیکھیں۔

تحفیظ کو کئی توں بڑھایے۔

اور دریں، رو رتیں۔

سپر کے ساتھ کمیاں موجود ہیں۔

پھر سے جدوں اور آئے۔

جواب کے ذریعے دیکھیں۔

کسی بھی دوست کو کئی توں بڑھایے۔

اور اپنے دوستوں کو کئی توں بڑھایے۔

اور اپنے دوستوں کو کئی توں بڑھایے۔

اور اپنے دوستوں کو کئی توں بڑھایے۔

اور اپنے دوستوں کو کئی توں بڑھایے۔

اور اپنے دوستوں کو کئی توں بڑھایے۔

اور اپنے دوستوں کو کئی توں بڑھایے۔

اور اپنے دوستوں کو کئی توں بڑھایے۔

اور اپنے دوستوں کو کئی توں بڑھایے۔

اور اپنے دوستوں کو کئی توں بڑھایے۔

اور اپنے دوستوں کو کئی توں بڑھایے۔

اور اپنے دوستوں کو کئی توں بڑھایے۔

اور اپنے دوستوں کو کئی توں بڑھایے۔

اور اپنے دوستوں کو کئی توں بڑھایے۔

اور اپنے دوستوں کو کئی توں بڑھایے۔

اور اپنے دوستوں کو کئی توں بڑھایے۔

اور اپنے دوستوں کو کئی توں بڑھایے۔

اور اپنے دوستوں کو کئی توں بڑھایے۔

اور اپنے دوستوں کو کئی توں بڑھایے۔

اور اپنے دوستوں کو کئی توں بڑھایے۔

اور اپنے دوستوں کو کئی توں بڑھایے۔

اور اپنے دوستوں کو کئی توں بڑھایے۔
(Class V)

**آموزشی نتائج (Learning Outcomes)**

- طلباً کا کسپاں کے ماحول میں واقع دوسرے اور فنون کے اخلاق سے روحانی کر کے خیال میں واقع کریں۔
- فنون اور قومی کونوں کے ساتھ بات چاتیں۔
- اشیاء کل زمانہ وارڈ کے ساتھ بات چاتیں۔
- سعے چاتیں۔
- خیالات کے اخلاق کے ساتھ بات چاتیں۔
- جنگل کے بات چیت کے ساتھ بات چاتیں۔
- اور سب واحی میں مطابق کر کے بات چاتیں۔

**سچی نہیں اور مثال (Suggested Pedagogical Process)**

- اولین سے جاری ہوائی کا وکالہ کے اخلاق سے روحانی کر کے خیال میں واقع کریں۔
- فنون اور قومی کونوں کے ساتھ بات چاتیں۔
- اشیاء کل زمانہ وارڈ کے ساتھ بات چاتیں۔
- سعے چاتیں۔
- خیالات کے اخلاق کے ساتھ بات چاتیں۔
- جنگل کے بات چیت کے ساتھ بات چاتیں۔
- اور سب واحی میں مطابق کر کے بات چاتیں۔

دری اور سیری کے دو حصے میں واقع دوسرے اخلاق کی تاریخ کرنے

*لیست کے اخلاق کا میری خواہاں کا جاگر ہے۔*

*کہا ہوا کے کرتے ہوئے کی بپا دی جاے۔*
विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए (भाषा संबंधी सुझाव)

- बहुभाषिकता, एक बच्चे की पहचान का भाग है और भारतीय भाषाओं में दृष्टान्तात्मक की एक चार्टिक की विशेषता है। भुमिभाषिकता का एक संसाधन के रूप में प्रयोग आवश्यक है और एक रचनात्मक भाषा शिक्षक को इसके अनुसार कमांड-क़क़ गतिविधियों की योजना बनानी चाहिए। यह न केवल सरलता से उपलब्ध संसाधनों का ही सर्वोत्तम उपयोग है बल्कि यह युविनिर्मित करने का भी तरीका है कि बच्चा सुरक्षित और स्वीकृत महसूस करता है और यह भी कि अपनी भाषाएं पूर्वभूति के कारण कोई भी पीछे न बूढ़े जाए (राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा — 2005)।

- ऐसे किसी क्षेत्र में जहाँ एक से अधिक जनजाति भाषाओं का प्रयोग होता है, वहाँ क्षेत्रीय संस्कृति अथवा सहभागी भाषा का उपयोग अथवा अधिसंख्यों की भाषा का प्राथमिकता दी जाती है।

- भाषा सीखने में कुछ बच्चों की विशेष कठिनाइयाँ हो सकती हैं और उन्हें इन कठिनाइयों के समाधान की योजना बनाने और अपनी कमज़ोरियों के क्षेत्र में मदद की आवश्यकता हो सकती है।

- यहाँ कुछ ऐसे बच्चे भी हो सकते हैं जिन्हें मोटे भाषा प्रयोग में अपनी कठिनाइयों की क्षति पूर्व की लागू भाषाओं का प्रयोग करते हैं।

- दृष्टिबाहित बच्चों के लिए

विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए भाषा संबंधी सुझावों का भी खोज रखा जाना चाहिए, जिसके लिए उन्हें अधिक समय और वैयक्तिक ध्यान/देखभाल की जरूरत है।

इतिहासिक संस्कृति आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए श्रद्धांजलि का भी ख्याल रखा जाना चाहिए, जिसके लिए उन्हें अधिक समय और वैयक्तिक ध्यान/देखभाल की जरूरत है।
• नयी शब्दावली को समझना।
• शब्दों के बीच में अंतर करना।
• शब्दों के अनेक अर्थ समझना।
• विचारों और संग्रहों के बीच संबंध बनाना।
• शिक्षा को व्यक्तित्व करना अथवा विचारों का निर्माण। विचारों के निर्माण में व्यक्तित्व और अर्थ की दृष्टि से सही वाक्य रचना शामिल है जो कि शायद इन बच्चों के लिए मुश्किल कार्य है।
• वाक्यांशों का प्रयोग और समझ।
• व्याकरण का प्रयोग (भूतकाल, कारक/परसंरेग, वस्तु-चिह इत्यादि)।
• वाक्य रचना।

संज्ञानत्मक रूप से वांछित तथा वीर्य असमर्थ वाले बच्चों के लिए:
• मीर्यक भाषा (सुनना, विचारों की अभिव्यक्ति और/अथवा बोलना) और अभिव्यक्तकरण (सुनोदपर्यंत और धारा अवश्य बोलने की योग्यता)।
• पतञ (शब्द पहचान, ध्वन्यात्मक ज्ञान और कूट संकेतों की समझ शामिल है)। विद्यार्थी शायद शब्दों को छोड़ दें, जहां से भक्त जाएं, एक शब्द को दूसरे से भ्रमित करें इत्यादि।
• वृद्धि-हस्त संयोजना और लेखन (अस्पष्ट हस्तलेख, वर्तमान की अव्यधिक गलतियाँ)।
• शिक्षा को व्यक्तित्व करना, दोहराना इत्यादि, शब्दों को बोलना और / अथवा कहानी का ग्राम।
• भाषा को समझना (नयी शब्दावली, वाक्य-संरचना, भिन्न अर्थ वाले शब्द और अवधारणाएँ) विशेषकर तब जब शीघ्रता से दिखाए या बता दिए जा जिससे कक्षा में नोट्स लेने में कठिनाई आती है।
• आलंकारिक भाषा – मुहावरे, रूपक, उपमा इत्यादि को समझना।